ISSN 2350 – 1065 MUKTANCHAL
वर्ष 12 अंक : 47, जुलाई-सितंबर 2025

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

विमर्श- हिंदी कहानी कौन पढ़ता है ?

विद्यार्थी मंच

मूल्य: 100 रुपये

उस पार से ....

कृष्णदत्त पालीवाल
4 मार्च 1943- फरवरी 2015

उत्तर-आधुनिकतावाद की मार के चलते हिंदी में बहुत कुछ संकटग्रस्त होकर संदिग्ध हो चला है। स्थापित को विस्थापित करने की पाठ प्रक्रिया ने व्यतीत आधुनिकतावाद की प्रकृति को भीतर से ध्वस्त कर दिया है। साहित्य - संस्कृति के जागरूक पाठकर्ताओं के लिए यह चुनौती भरा समय है। मै समझता हूँ कि ये चुनौतियां आलेखों की ' आलोचिंतना ' पद नजदीकी पाठ-पढ़त में ज़रूरी नहीं रहा। संदर्भो से जोड़कर एक पाठ का पाठक आज अनंत-अर्थ कर रहा है, इसलिए आलोचिंतना भीतर की आँखों को खोलने का खेल शुरू कर रही है। साहित्य संस्कृति के पाठ से जुड़े अध्ययनों में विमर्श निर्णायक होने लगे है।

- सृजन का अंतर्पाठ (2009)

शोध, समीक्षा, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

वर्ष: 12, अंक: 47, जुलाई-सितंबर 2025

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा
प्रकाशक : विद्यार्थी मंच
प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय
कला संपादक : शुभगाता श्रीवास्तव

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

पंकज साहा : प्राक्तन अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, बर्मिंघम, यू०के०
अरुण कुमार : प्राक्तन प्राध्यापक, राँची विश्वविद्यालय
मृत्युंजय श्रीवास्तव : संस्कृतकर्मी और विचारक
प्रकाश कु. अग्रवाल : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगवासी कॉलेज
चित्रा माली : प्रभारी अकादमिक निदेशक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता
विजया सिंह : रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
विजय कुमार साव : काजी नजरूल विश्वविद्यालय आसनसोल
उत्सव सिन्हा : वर्चुअल प्रोडक्शन स्पेसिअलिस्ट, मुंबई

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन

विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, नगीना लाज दास, प्रीति सिंह, अनीता ठाकुर एवं रुद्रकान्त झा

संपर्क एवं प्रसार :

विनोद यादव : 9007517546, पद्माकर व्यास : 9433196407
चांदनी सिन्हा (वर्मिंधन, यू०के०) : +447411412229
जैखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev 010) में भेजें।
पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

मुद्रक : **गाथा प्रकाशन,** 6/2/1, आशुतोष मुखर्जी लेन, हावड़ा - 711106

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ० धूपनाथ प्रसाद : प्राक्तन प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
डॉ० विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय), कोलकाता.
डॉ० मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद
डॉ० मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन
डॉ० अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात, पश्चिम बंगाल
डॉ० मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ० सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ० अंजनी कुमार झा : प्राध्यापक, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
डॉ० शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता
डॉ० सुनील कुमार 'सुमन': प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
डॉ. अमित राय : प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

मुक्तांचल : A/C. 50200014076551, HDFC Bank BURRABAZAR, KOLKATA-700007. IFSC CODE-HDFC0000219

संपर्क करें :
डॉ० मीरा सिन्हा (संपादक) : 9831497320
सुशील कुमार पाण्डेय : 9681105070
कार्यालय प्रभारी :
बलराम साव : 8910783904
ई-मेल muktanchalpatrika@gmail.com/ sinhameera48@gmail.com

पत्रिका का मूल्य : एक अंक 100 रुपये
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 3000 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये
डाक खर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 45 रुपये

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

06 **संस्तुति**

आलेख

07 डॉ. राजीव कुमार रावत — कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी का भविष्य : संभावनाएँ, चुनौतियाँ और समाधान

11 सेवाराम त्रिपाठी — व्यंग्य की आड़ में हास्य-विनोद और मसखरेपन की खेती

15 राजेन्द्र सिंह गहलौत — लघुकथा सिर्फ लघुकाय नहीं होती

18 डॉ. अनूप श्री विजयिनी — रेखाचित्र का उद्भव और विकास परंपरा

अनुशीलन

22 डॉ. पंकज साहा — प्रेमचंद का स्वराज्य

24 डॉ. जया सुभाष बागुल — समकालीन हिंदी दलित महिला कहानी लेखन

26 डॉ. मकेश्वर रजक — राजेश जोशी का कथा-साहित्य

29 डॉ. शेर सिंह मीणा — राकेश रंजन कृत 'तलईकूतल' कहानी का आलोचनात्मक विश्लेषण

विमर्श

32 मृत्युंजय श्रीवास्तव — हिंदी कहानियाँ पढ़ता कौन है?

शोधार्थी की कलम से

34 संजय कुमार सेन — हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य : सामाजिक मैत्रेयी

36 तनु प्रिया — पुष्पा का साहित्य: एक पहचान

अन्त: पाठ

40 पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' — गगन गिल की कविता 'कितने बरस तुम'

पुस्तक समीक्षा

44 धनेश दत्त पाण्डेय — पहचानने की परिशुद्धता : 'हिंदी उपन्यास : सार्थक की पहचान'

50 डॉ. अमरनाथ — संविधान सभा में भाषायी विमर्श: विभाजन जीत गया

53 अस्मिता सिंह — **अल्बेयर कामू का 'ला प्रीमियर होमे'**

55 सुलेखा कुमारी — दाम्पत्य में घर की संभावनाएं तलाशती: नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली'

कहानी

58 सुषमा मुनीन्द्र — हवा ने रुख बदल लिया है

64 अशोक आशीष — अभिशप्त जनम

70 रेणुका अस्थाना — मैं बरगद तुम्हारा दोस्त

73 पूजा गुप्ता — उसका निर्णय

शोध समीक्षण सृजन संचार

77 सुरेन्द्र पटेल — लोन

संस्मृति

84 अरुण कुमार — विमल वर्मा : प्रगतिशील साहित्य का उपेक्षित साधक

संस्मरण

87 सतीश नूतन — सीताकांत महापात्र : अविस्मरणीय मुलाकात

91 विनोद साव — जन्म-शती स्मरण : डॉ. नामवर सिंह

नया कदम नई पहल

93 विमुग्ध लाल — टेसू और झांझी

कविता

98 सुशील कुमार पाण्डेय — आज ही जीवन है

99 आनंद प्रकाश — जब अमुक लोग अपनी छाया से डरने लगें, एक था चाँद, कितना कुछ है जो न हुआ, संकरी गली

102 रवि कुमार — वह निगाह, तलाश, आसमान ग़ायब था, वे सौन्दर्य देखते हैं, गिलहरियों को सड़क पार करना नहीं आता

104 डॉ. शकीला बानो — समर्पण, शिला से स्वर तक, जीवन का सत्य: परिवर्तन, जीवन का उद्घोष, स्त्री का देवत्व

107 राजकुमार जैन राजन — प्रेरणा, भाग्य, उत्खनन, जीवन निर्माण, आहट, लघु पत्रिका

साक्षात्कार

110 डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' — समकालीन आलोचना के सशक्त हस्ताक्षर प्रो. बी. एल. आच्छा से संवाद

पुस्तकायन

115 शैलेश पंडित — चर्चा : संस्कृति के व्यापक सरोकार संदर्भ 'भगत सिंह और पाश : अंधियारे का उजाला'

119 भगवती प्रसाद द्विवेदी — शीतल समीर की ताज़गी और मीठी छुअन का अहसास

121 **अभिमत**

जयप्रकाश मानस, डॉ० वरुण कुमार तिवारी, डॉ. मंजू रानी सिंह, कौशल किशोर, डॉ. राजीव कुमार रावत, सेराज खान बातिश

128 **गतिविधियाँ**

132 **समीक्षार्थ पुस्तकें**

प्रत्येक लक्ष्य के पीछे एक परिपक्व सोच होती है और उसे पाने के लिए कार्य करने की एक शैली बनती है, जो सोच के अनुसार प्रचलित कार्य शैली से भिन्न हो सकती है। 'विद्यार्थी मंच' ने जिस लक्ष्य को लेकर कार्य करने का संकल्प लिया था उसमें भिन्नता है, क्योंकि इसकी ज़रूरत महसूस की गई थी इसीलिए हम एकजुट हुए थे, दस-पंद्रह वर्षों के लंबे दौर में कई-कई साथियों ने अपनी-अपनी राह बना ली और कई-कई लोग नए आ जुड़े, लेकिन आधारभूत ढाँचे में कोई फर्क नहीं आया। हम अपनी सोच, संकल्प और कार्यशैली को लेकर ही 'मुक्तांचल' जैसी अकादमिक पत्रिका का संचालन कर रहे हैं और गाथा प्रकाशन को भी मूर्त रूप देने जा रहे हैं। हम 'वायरल' शब्द से परहेज रखते है, क्योकि यह बाज़ार के खतरनाक आयाम से जुड़ा शब्द है जो बड़े कोहराम से शुरू होकर लंबे सन्नाटे में तब्दील हो सकता है। आज पूरी दुनिया उसकी चपेट में है। ध्वंस का दानव इतना विकराल हो गया है कि प्रत्येक मनुष्य अपने अंतर्मन के खांडव-वन में प्रतिहिंसा की अग्नि झेल रहा है।

हमारी सोच और संवेदना, सृजन और साहित्य बाज़ार के अंतरजाल से मुक्ति के लिए संघर्ष करती रहती है। विक्रय के बिना पर जिस चीज़ को तैयार किया जाता है वह उत्पादन होता है। उत्पाद अथवा वस्तु को बाज़ार के पैमाने पर लुभाने के लिए प्रचार पट पर लगाकर 'हाई लाइट' होना होता है, जिससे वो 'ब्रांड' बन जाए और ज्यादा से ज्यादा बिक सके। सवाल यह उठता है कि क्या आज हर सृजनात्मक प्रयास को भी उत्पाद के स्तर तक ले जाना ज़रूरी है?

हम सृजन और सोच से विरत होकर उत्पादन की प्रक्रिया से न्यस्त होते चले जा रहे हैं। ऐसे में बाज़ार की लीला हमें लीलती चली जा रही है -सोच और संवेदना, सृजन और उसका पक्ष सब कुछ ढह कर एकमएक होता जा रहा है।

हमारा शिक्षा और साहित्य का संसार भी मरीचिका के मायाजाल में फँस गया है। स्पर्धा - प्रतिस्पर्धा का विकट दौर तारी है और हम सभी ठहरे वगैर दौडते चले जा रहे है - गिरावट इतनी कि सम्हलने की चेष्टा दम तोड़ चुकी है। बाज़ार के वश में है इन्सान और उसी के छतरी तले खड़े नज़र आ रहे हैं तथाकथित साहित्यकार, वर्ग विशेष के प्रतिनिधि बनकर अपनी शख़्सियत की चमक से अभिभूत और आत्मलिप्त हैं।

लंबे समय से साहित्यिक ज़मीन की गतिविधियों से जुड़े रहने के तजुर्बे बड़े तिक्त हैं। विचार विभेद हो तो कोई बात नहीं, लेकिन 'बड़ा लेखक' और 'साधारण लेखक' जैसा वर्गीकरण अध्येताओं की दुनिया की आम बात है। साहित्यिक जलसा पैसों का खेल है। साहित्यिक मुतालबा अगर धन-अर्जन की तरफ न होकर यश संवर्धन की तरफ होता तो बेहतर होता।

साहित्य में महत्वपूर्ण कृति पहले है तब कृतिकार, परंतु हम मूल्यांकन विपरीत क्रम में करतें है, कृति पीछे रह जाती है कृतिकार का बड़ा चेहरा सामने होता है और उस चेहरे के बल पर ही रचना चर्चित होती है। ज्यादातर रचनात्मक प्रयास अँधेरे में रह जातें है, क्योंकि उन्हें उजागर होने का मौका ही नहीं मिल पाता।

रचनाकार को कितने पुरस्कार मिले उसकी कसौटी बनती है और तभी उसकी रचनाओं पर कोई गौर करता है।

मुक्तांचल एक ऐसी अकादमिक पत्रिका है जो इन पूर्वाग्रहों से मुक्त है और निरंतर रचना की गुणवत्ता पर ध्यान देती है। मुक्तांचल का अगला अंक एक विशेषांक है जो कथा समालोचक एवं समीक्षक मधुरेश पर केंद्रित है। प्रस्तुत अंक में कहानी पर 'बोल्ड' विमर्श है 'हिंदी कहानी कौन पढ़ता है?' उम्मीद है आप इस विमर्श के साथ-साथ अन्यान्य सामग्रियों पर भी अपना अभिमत प्रेषित करेंगे।

संपादक